मोदी की हैट्रिक

पर क्या प्रधानमंत्री बन पाएंगे?

-मनोज कुमार झा

तय था जीत मोदी की होगी। और हुई। सोनिया और राहुल कुछ नहीं कर पाए। गुजरात में लगातार पांचवी बार भाजपा की सरकार बनी। और लगातार तीसरी बार मोदी की। नरेन्द्र मोदी। 'हिटलर' का भारतीय चेहरा।

चुनाव में मतदान प्रतिशत इतना ज़्यादा रहा कि स्वयं मोदी भी चिंतित हो गए थे। बहरहाल पहले के मुकाबिले भाजपा को सिर्फ़ दो सीटें कम मिली। और जीत के बाद अहमदाबाद के उस मुस्लिम बहुल इलाके खानपुर में, जहां बीजेपी का स्टेट ऑफिस है, मोदी ने अपने 45 मिनट के भाषण में अपनी जीत को अपना नहीं कहा। छः करोड़ गुजरातियों की जीत बताया। आमतौर पर गुजराती में जनता को संबोधित करने वाले मोदी ने हिंदी में बोलना ज़्यादा मुनासिब समझा और जब वे जीत का 'जश्न' भाषण देते हुए मना रहे थे, वहां मौजूद अमूमन दस हज़ार से ज़्यादा की भीड़ से 'दिल्ली दिल्ली' की आवाजें आ रही थीं।

भाजपा के सभी बड़े नेताओं ने एक तरह से मान लिया है कि 2014 में मोदी ही पार्टी की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे। संघ परिवार भी मोदी को स्वीकार करने के लिये बाध्य हो चुका है। कांग्रेस पूरी तरह बेदम है। प्रसिद्ध इतिहासकार और राजनीतिक विश्लेषक प्रो.रामचंद्र गुहा ने कहा है कि सोनिया के बाद कांग्रेस का पूरी तरह खात्मा हो जाएगा। उन्होंने राहुल को राजनीतिक व्यक्तित्व मानने से भी इनकार कर दिया है। हिमाचल की जीत लोकसभा चुनावों के लिये कोई खास मायने नहीं रखती। कांग्रेस की लुटिया तो डूबनी ही डूबनी है। सोनिया में इतना दम नहीं कि वह कांग्रेस को बचा पाएं। और राहुल एक औसत दर्जे के व्यक्ति हैं। भारत जैसे देश का प्रधामंत्री बनने की काबिलियत उनमें नहीं है। यह तो मनमोहन सिंह में भी नहीं है। पर भ्रष्टाचार में सिर से पांव तक डूबी सरकार चल रही, चलेगी भी, पर कब तक?

जहां तक भाजपा का सवाल है, लालकृष्ण आडवानी पहले ही कह चुके हैं कि कांग्रेस को जीत नहीं मिलेगी तो उनकी पार्टी भी इस हालत में नहीं है कि जीत दर्ज़ करा सके। आडवानी का यह आकलन सही है। पार्टी के पास कोई मुद्दा नहीं है, न ही नेतृत्व। साम्प्रदायिक मुद्दे अब नहीं चलेंगे।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि भाजपा में ऐसे तत्व हैं जो मोदी जैसे हिटलरशाह को स्वीकार नहीं कर सकते। मोदी और गडकरी की लड़ाई सतह पर पहले ही आ चुकी है। भ्रष्ट गडकरी को संघ का समर्थन प्राप्त है, पर मोदी को भी अनदेखा कर पाना। उसके लिए संभव नहीं। संघ, भाजपा और धड़ों में बंटे नेतृत्व के बीच अन्तर्विरोध और उग्र होंगे।

मोदी विकास की बात करते हैं। पर वह विकास किसका विकास है।

भारतीय प्रेस परिषद् के अध्यक्ष जस्टिस मार्कंडेय काटजू ने कहा है कि गुजरात के गांवों में लोगों को रोटी नहीं मिल पा रही है।

मोदी ने अपने भाषण में कुछ गलतियों का भी ज़िक्र किया और माफ़ किये जाने की बात कही। पर गोधरा कांड के बाद मोदी के नेतृत्व में जिस बड़े पैमाने पर नरसंहार हुआ, उसे न तो भूला जा सकता है और जनता इसके लिये उन्हें माफ़ भी नहीं कर सकती। 'नरोदा पाटिया' को आख़िर कोई कैसे भूल सकता है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सिर्फ़ गुजरात में जीत के दम पर मोदी भारत जैसे विशाल देश के प्रधानमंत्री नहीं बन सकते। भारत का प्रधानमंत्री कौन होगा, इसे उत्तर प्रदेश, बिहार एवं अन्य बड़े राज्य तय करते हैं। इन राज्यों में मोदी की दाल नहीं गल सकती। 2014 में इन राज्यों में भाजपा की पराजय होना लगभग तय है।

सवाल गठबंधन का है। अगर संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन भराभरा कर ढह जाता है तो भाजपा की भी ऐसी ही स्थिति होने वाली है। गौरतलब है, मोदी की जीत पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने उन्हें बधाई नहीं दी। नीतिश मोदी के सवाल पर भाजपा गठबंधन से बाहर हो जाएं तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। भाजपा का साथ छोड़ने के बाद वे मुलायम, ममता आदि क्षत्रप नेताओं से मिलना ज़्यादा मुनासिब समझेंगे। नीतीश को बिहार में भाजपा चुनौती दे पाने की स्थिति में नहीं है। कुल मिलाकर संप्रग और राजग का हाल बुरा होने वाला है। इस बात की पूरी संभावना है कि कुछ अलग किस्म का ध्रुवीकरण हो और इसमें संप्रग और राजग से टूटे-बिखरे दलों के नेता किसी भी कीमत पर सत्ता हासिल करने के लिये एक हो जाएं। वामपंथी जो अभी पूरी तरह हाशिए पर आ गए हैं, इसी में अपने लिए संभावना तलाश रहे हैं। ये सब मोदी के कट्टर विरोधी हैं।

फिर मोदी प्रधानमंत्री कैसे बन पायेंगे। यह आडवाणी भी अच्छी तरह समझ रहे हैं, पर अब वह भाजपा की नीतियों को निर्धारित नहीं कर सकते। इधर, गडकरी को दोबारा भाजपा अध्यक्ष नहीं बनने देने के लिए मोदी पूरा जोर लगाएंगे।

2009 में राजग की शर्मनाक हार के बाद संघ ने गडकरी को भाजपा पर थोप दिया। संघ ने भाजपा पर पार्टी संविधान में संशोधन करने के लिए काफ़ी दबाव बनाया ताकि गडकरी को दोबारा अध्यक्ष बनाया जा सके। गडकरी पर भ्रष्टाचार के जब गंभीर आरोप लगे और इस मौके का लाभ उठाते हुए गडकरी विरोधी गुट हमलावर तेवर दिखाने लगे तो संघ ने अपने वरिष्ठ स्वयं सेवक एस.गुरूमूर्ति को इस मामले की जांच करने को कहा और उन्होंने 'जांच' के बाद गडकरी को क्लीन चिट दे दिया। यानी इसे ही कहते हैं, 'खुद ही मुज़रिम,खुद ही मुंसिफ'। इस जांच और 'क्लीन चिट' के बाद संघ के एक प्रमुख अधिकारी एम.जी. वैद्ध ने साफ-साफ कहा है कि गडकरी के खिलाफ अभियान चलाने के लिए मोदी ज़िम्मेदार हैं।

भाजपा पर संघ का शिकंजा मजबूत होता जा रहा है, इस पार्टी के लिए आगे बढ़ने में सबसे बड़ी बाधा है। इसे आडवानी ने महसूस किया था और 2005 में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में भाजपा के मामलों में संघ की दखलन्दाजी का विरोध किया था। उनका तर्क था कि भाजपा पर संघ का नियंत्रण इसके लिए अच्छा नहीं है, क्योंकि संघ परिवार राजनीतिक लड़ाई लड़ना नहीं चाहता है। पर आडवानी की एक न चली। 'जिन्ना प्रकरण' के बाद आख़िरकार उन्हें इस्तीफ़ा देना ही पड़ा।

मोदी नव धनिक वर्ग, मिडल क्लास का प्रतिनिधित्व करते हैं। आम जनता से उनका कोई जुड़ाव नहीं। वह तो किसी भी पार्टी के किसी भी नेता का नहीं है। पर मोदी के साथ खास बात यह है कि उन्हें उद्योगपतियों का समर्थन प्राप्त है। टाटा से लेकर अंबानी और एयरटेल के मित्तल का भी। पश्चिम बंगाल से भगाये जाने के बाद 'नैनो' के लिए टाटा को गुजरात में ही जगह मिली। मारूति सुजुकी भी गुजरात में संयंत्र स्थापित करने जा रही है। मारूति सुजुकी के अध्यक्ष आर.सी.भार्गव, प्रबंध निदेशक शिंजो नाकानिशी और मुख्य परिचालन अधिकारी मयंक पारिख ने 22 दिसम्बर को एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि गुजरात में कंपनी के संयंत्र अगले साल शुरू हो जाएंगे। ऐसी जानकारी मिल रही है कि गुजरात के संयंत्रों में लगभग 80 फ़िसदी काम रोबोट द्वारा होगा।

स्पष्ट है कि मोदी किसके साथ खड़े हैं। भूलना नहीं होगा कि अनिल अंबानी एवं एयरटेल के मित्तल के साथ छोटे-बड़े उद्योगपतियों का एक प्रतिनिधि मंडल गत वर्ष मोदी से मिला था और उसने आग्रह किया था कि प्रधानमंत्री बनने के लिए वह राष्ट्रीय राजनीति में आएं।

पर हम अच्छी तरह जानते हैं कि भारतीय जनतंत्र भले ही जैसा भी हो अथवा जनतंत्र नही हो, पर उद्योगपति यहां किसी को प्रधानमंत्री नहीं बनवा सकते। बहरहाल, मोदी की जीत के बाद उद्योगपतियों में भारी उत्साह देखा गया। गुजरात के बड़े शहरों और मुंबई में बड़े व्यापारियों ने सड़कों पर नाच-गाकर, आतिशबाजी कर और एक-दूसरे को मिठाइयां खिलाकर मोदी की जीत का जश्न मनाया। पर क्या ये उन्हें प्रधानमंत्री भी बनवा सकते है? हर्गिज नहीं। वजह यह है कि भारतीय अर्थव्यवस्था लकवा ग्रस्त है।

फ्रेंच पॉलिटिकल साइंटिस्ट क्रिस्टोफ जैफरे ने लिखा है कि भाजपा नेतृत्व के संकट का सामना कर रही है। उन्होंने साफ लिखा है कि मोदी सिर्फ़ संघ परिवार और भाजपा के लिये ही समस्या नहीं है, कमोबेश वे भारतीय राजनीति के लिए ही समस्या बन चुके है। उनहोंने यह भी लिखा है कि भाजपा यदि उन्हें प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाती है तो राजग के कई घटक दल उससे अलग हो जाएंगे। वैसे भी, अब घटक दल रह ही कितने गए हैं!

पर मोदी पहले तो भाजपा अध्यक्ष बनना चाहते हैं, फिर प्रधानमंत्री। भारत जैसे बहुलतावादी देश में, और जब राजनीति में क्षत्रप हावी हैं, यह संभव नहीं है। पर सपनें देखने से किसी को कैसे रोका जा सकता है, भले ही ये 'मुंगेरी लाल के हसीन सपनों' जैसे हों।

ऐसा लगता है, हैट्रिक के बाद मोदी में असुरक्षा-बोध ज्यादा ही बढ़ गया है, तभी तो वह 150 करोड़ की लागत से बन रहे बुलेटप्रूफ ऑफिस में शिफ्ट होने जा रहे हैं। ■

फ्रेंच पॉलिटिकल साइंटिस्ट क्रिस्टोफ जैफरे ने लिखा है कि भाजपा नेतृत्व के संकट का सामना कर रही है। उन्होंने साफ लिखा है कि मोदी सिर्फ़ संघ परिवार और भाजपा के लिये ही समस्या नहीं है, कमोबेश वे भारतीय राजनीति के लिए ही समस्या बन चुके है। उनहोंने यह भी लिखा है कि भाजपा यदि उन्हें प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाती है तो राजग के कई घटक दल उससे अलग हो जाएंगे। वैसे भी, अब घटक दल रह ही कितने गए हैं।

पर मोदी पहले तो भाजपा अध्यक्ष बनना चाहते हैं, फिर प्रधानमंत्री। भारत जैसे बहुलतावादी देश में, और जब राजनीति में क्षत्रप हावी हैं, यह संभव नहीं है। पर सपनें देखने से किसी को कैसे रोका जा सकता है, भले ही ये 'मुंगेरी लाल के हसीन सपनों' जैसे हों। ऐसा लगता है, हैट्रिक के बाद मोदी में असुरक्षा-बोध ज्यादा ही बढ़ गया है, तभी तो वह 150 करोड़ की लागत से बन रहे बुलेटप्रूफ ऑफिस में शिफ्ट होने जा रहे हैं।